छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता का स्वरुप

डॉ. प्रीति कंसारा
सहायक प्राध्यापक–अर्थषास्त्र
शासकीय दू.ब.महिला महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

सारांष – विश्व की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, वे न केवल अपने पारिवारिक व सामाजिक विकास के लिए उत्तरदायी है अपितु राष्ट्र के आर्थिक एवं में भी इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। आज महिलाएं अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रबंधकीय कुशलता का प्रदर्शन कर रही हैं। कई भारतीय महिलाओं ने अपने देश के साथ–साथ विदेशों में भी अपने कुशल प्रबंधन एवं संचालन में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। आज महिलाएं परंपरागत, अकुशल क्षेत्रों के साथ साथ गैर परंपरागत पुरुष प्रधान क्षेत्रों में प्रवेश कर अपनी योग्यता सिद्ध कर रही है। पिछले कुछ वर्षों से लगभग सभी देशों में महिलाओं की आर्थिक सहभागिता में तेजी से वृद्धि हुई है। नए युग की बदलती चुनौतियों एवं अवसरों ने महिलाओं को नौकरी करने के स्थान पर नौकरी प्रदाता बना दिया है तथा आधुनिक महिलाएं रोजगार सृजनकर्ता के रुप में उभर रही हैं। उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता प्रदान की है।

छत्तीसगढ़ के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भी भूमिका महत्वपूर्ण है, अतः प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता की स्थिति का अध्ययन एवं निष्कर्ष हेतु प्रयास किया गया हैं।

कुंजी शब्द – महिला उद्यमिता, छत्तीसगढ़।

महिला उद्यमिता का वैष्विक परिदृष्य–

विश्व की लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं में महिला उद्यमियों की उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। यद्यपि उद्यमिता के क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व रहा है लेकिन विकसित राष्ट्रों में महिलाओं को भी विकास के योग्य एवं जिम्मेदार घटक के रुप में मान्यता मिल रही है। उच्च शिक्षित एवं तकनीकी रुप से समृद्ध महिलाओं ने उद्यमिता के क्षेत्र में कामयाबी हासिल की है।

अध्ययन का उद्देष्य–

1. छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता की स्थिति को ज्ञात करना।
2. महिला उद्यमिता के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना–

1. छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता की स्थिति निम्न है।
2. छत्तीसगढ़ में महिलाओं द्वारा संचालित अधिकांश उद्यम छोटे पैमाने के एवं स्ववित्तीय हैं□

समंकों का संकलन –

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित है। समंकों के विश्लेषण हेतु राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन द्वारा जारी छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना की रिपोर्ट का प्रयोग किया गया है।

समंकों का विष्लेषण –

समंकों का विश्लेषण हेतु प्रतिशत, क्रम एवं माध्य विधि का प्रयोग किया गया है।

तालिका क्रमांक –1
महिला उद्यमिता का वैष्विक क्रम

क्र	देष	क्रम
1	अमेरिका	1
2	आस्ट्रेलिया	2–3
3	कनाडा	2–3
4	चीन	15–17
5	द.कोरिया	15–17
6	ब्राजील	18–19
7	रुस	18–19
8	द.आफ्रीका	20
9	नइजीरीया	23
10	भारत	29
11	बांग्लादेश	31

Source- Globel women entrepreneur leader report, 2015.

Globel women entrepreneur leader report, 2015, के अनुसार विश्व के 31 देशों में भारत को 29 वां स्थान प्राप्त हुआ तथा कुल 100 अंकों में से 17 अंक के साथ महिला उद्यमिता की स्थिति भारत में काफी निम्न रही है।

भारत में महिला उद्यमिता–

भारतीय महिलाएं भी आज अपनी परंपरागत छवि से ऊपर उठकर विभिन्न चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में सफलता अर्जित कर रही हैं। विश्व की सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची में अब भारतीय महिलाएं भी अपना स्थान बना रही है। भारत में तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र की उन्नति ने विकास में प्रेरक घटक का कार्य किया है।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के 68वें दौर की गणना के अनुसार भारत में महिला प्रमुख परिवारों की संख्या ग्रामीण क्षेत्र में 11.5 प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र में 12.4 प्रतिशत है। भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत एव महिला कार्यसहभागिता दर 25.51 प्रतिशत है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन द्वारा छठीं आर्थिक गणना के अनुसार व्यावसायिक उद्यमों का केवल 14 प्रतिशत महिला उद्यमियों द्वारा संचालित है। भारत में कुल 585 लाख उद्यम हैं जिसमें 80.5 लाख उद्यम ही महिलाओं द्वारा संचालित है। 134 लाख लोग विभिन्न महिला उद्यमों में संलग्न हैं जो कुल श्रमशक्ति का 10.24 प्रतिशत है।

भारत में कुल महिला उद्यमियों का 65.12 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में एवं 34.88 प्रतिशत शहरी क्षेत्र में है। 83.19 प्रतिशत उद्यम महिलाओं द्वारा अकेले स्वयं संचालित है केवल 16.81 प्रतिशत उद्यमों में श्रमिकों द्वारा संचालित है। आर्थिक गतिविधियों के आधार पर 34.3 प्रतिशत महिला उद्यम कृषि क्षेत्र में एवं 65.70 गैर कृषि क्षेत्र में संलग्न हैं। भारत में कुल महिला उद्यमियों का 89 प्रतिशत चिरस्थाई, 9 प्रतिशत मौसमी एवं 2 प्रतिशत आकस्मिक प्रकृति के हैं। श्रमिक संख्या के अनुसार महिला उद्यम भारत में कुल महिला उद्यमियों का 83.19 प्रतिशत उद्यम महिलाओं द्वारा अकेले स्वयं संचालित है केवल 16.81 प्रतिशत उद्यमों में कम से कम श्रमिक को काम पर रखा गया है, अर्थात भारत में महिलाओं द्वारा संचालित अधिकांश उद्यम छोटे पैमाने के हैं□

महिलाओं द्वारा संचालित कुल उद्यमों के वित्तीय स्त्रोत अधिकांश 79 प्रतिशत स्ववित्तीय हैं केवल 14.65 प्रतिशत अन्य संगठनों से दान व सहयोग, 3.4 प्रतिशत सरकारी सहायता एवं 1.1 प्रतिशत वित्तीय संस्थानों से ऋण के रूप में प्राप्त किये हैं। धर्म के आधार पर सर्वाधिक 65.6 प्रतिशत महिला उद्यमी हिन्दू हैं एवं वर्ग के आधार पर सर्वाधिक 60 प्रतिशत महिला उद्यमी वंचित परिवारों से हैं।

तालिका क्रमांक –2

भारत में राज्यवार महिला उद्यमियों का विवरण

	राज्य	कुल महिला उद्यम	:
1	तमिलनाडु	1087609	13.51
2	केरल	913917	11.35
3	आंध्रप्रदेश	849912	10.56
4	प. बंगाल	831337	10.33
5	महाराष्ट्र	664300	8.25
6	कर्नाटक	545806	6.78
7	गुजरात	528623	6.57
8	उत्तर प्रदेश	482379	5.99
9	तेलंगाना	356486	4.43
10	उडीसा	249600	3.1
11	राजस्थान	247992	3.08
12	म. प्र .	223405	2.77
13	बिहार	153610	1.91
14	आसाम	154158	1.91
15	हरियाणा	124524	1.55
16	पंजाब	110921	1.38
17	मणीपुर	88286	1.1
18	छत्तीसगढ	77976	0.97
19	दिल्ली	70434	0.87
20	झारखंड	54732	0.68
21	हिमाचल प्रदेश	49173	0.61
22	जम्मू कश्मीर	31292	0.39
23	उत्तराखंड	31419	0.39
24	मेधालय	29530	0.37
25	गोवा	16656	0.21
26	मिजोरम	15828	0.2
27	त्रिपुरा	14506	0.18
28	नागालैंड	13657	0.17
29	पांडीचेरी	10169	0.13
30	अरुनाचल प्रदेश	6413	0.08
31	चंडीगढ	5783	0.07
32	सिक्कीम	5304	0.07
33	अंडमान निकोबार	2513	0.03
34	दादरा नागर हवेली	1304	0.02
35	दमन दीव	805	0.01
36	लक्षदीप	460	0.01
	कुल	**8050819**	**100**

स्त्रोत– छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना रिपोर्ट 2016.

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि भारत में कुल महिला उद्यमियों की संख्या 8050819 है, जो कुल उद्यम क्षेत्र का 13.83 प्रतिशत है। सर्वाधिक महिला उद्यमी तमिलनाडु में 13.51 प्रतिशत, केरल में 11.35 प्रतिशत, आंध्रप्रदेश में 10.56 प्रतिशत, प. बंगाल में 10.3 प्रतिशत एवं महाराष्ट्र में 8.25 है। उद्यम क्षेत्र में महिला उद्यमियों का योगदान भारत की कुल महिलाओं का 0.97 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि यद्यपि छत्तीसगढ़ के सामाजिक, आर्थिक परिदृश्य में महिलाएं एक विशिष्ट स्थान रखती हैं किंतु यहां महिलाओं में औद्योगिक उद्यमीय प्रवृत्ति का आभाव है।

भारत में महिलाओं को उद्यमिता के संदर्भ में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रमुख बाधाओं में सफल उद्यमियों के साथ सम्पर्क की कमी, उद्यमी के रूप में सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक जिम्मेदारी, लैंगिक भेदभाव, बैंक द्वारा ऋण के संबंध में कम प्राथमिकता तथा महिलाओं को परिवार एवं कार्यक्षेत्र के मध्य गतिरोध का सामना करना पड़ता है। मुख्य चुनौतियों के रूप में महिलाओं को बाजार की पर्याप्त जानकारी का अभाव एवं उत्पादन लागत वृद्धि का सामना करना पड़ता है।

छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता–

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 2.11 प्रतिशत जनसंख्या छत्तीसगढ़ में निवास करती है। जिसमें पुरुष जनसंख्या 50.23 प्रतिशत एवं महिला जनसंख्या 49.77 प्रतिशत है तथा कुल कार्यशील जनसंख्या में महिलाओं की सहभागिता 40 प्रतिशत है।

1. उद्यम की प्रकृति के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम–

छत्तीसगढ़ में कुल महिला उद्यमियों का केवल 57.49 प्रतिशत ही चिरस्थायी प्रकृति का है, शेष मौसमी एवं आकस्मिक प्रकृति के हैं।

तालिका क्रमांक–3
उद्यम की प्रकृति के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम

क	उद्यम	संख्या	प्रतिषत
1	चिरस्थायी	44829	57.49
2	मौसमी	32501	41.68
3	आकस्मिक	646	0.83
	कुल	**77976**	**100**

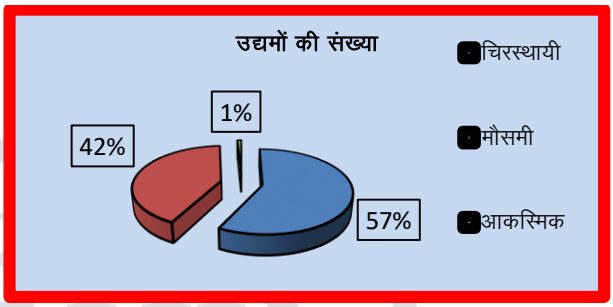

स्त्रोत– छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना रिपोर्ट 2016.

2. श्रमिक संख्या के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम–
छत्तीसगढ़ में कुल महिला उद्यमियों का 98.9 प्रतिशत उद्यम महिलाओं द्वारा अकेले स्वयं संचालित है, केवल 1.1 प्रतिशत उद्यमों में श्रमिकों को काम पर रखा गया है, अर्थात महिलाओं द्वारा संचालित अधिकांश उद्यम छोटे पैमाने के हैं□

3. वित्त के स्त्रोत के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम– महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों में 75.35 प्रतिशत उद्यम स्ववित्तीय हैं केवल 24.65 प्रतिशत महिलाओं ने अन्य वित्तीय स्त्रोतों से आर्थिक सहायता ली है जिसमें अन्य संगठनों से दान व सहयोग 17.66 प्रतिशत, सरकारी सहायता 5.60 प्रतिशत, वित्तीय संस्थानों से ऋण 0.87 प्रतिशत, गैर संस्थागत ऋण 0.35 प्रतिशत, स्वसहायता समूह से ऋण 0.17 प्रतिशत शामिल हैं।

तालिका क्रमांक –4
वित्त के स्त्रोत के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम

क	वित्त के स्त्रोत	संख्या	प्रतिषत
1	स्ववित्तीय	58761	75.35
2	अन्य संगठनों से दान व सहयोग	13768	17.66
3	सरकारी सहायता	4365	05.60
4	वित्तीय संस्थानों से ऋण	680	00.87
5	गैर संस्थागत ऋण	267	00.35
6	स्वसहायता समूह से ऋण	135	00.17
	कुल	**77,976**	**100**

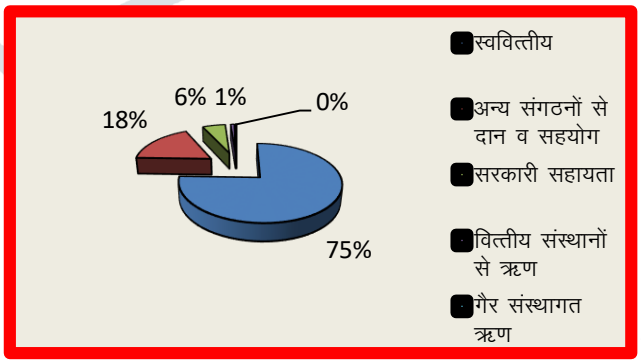

स्त्रोत– छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना रिपोर्ट 2016.

4. सामाजिक वर्ग के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम–

वर्ग के आधार पर केवल 31 प्रतिशत उद्यमी महिलाएं सामान्य वर्ग की हैं जबकि अधिकांश उद्यमी महिलाएं वंचित वर्ग से है, जिसमें अन्य पिछड़ा वर्ग 29.76 प्रतिशत, अनुसूचित जाति 7.30 प्रतिशत एवं अनुसूचित जनजाति 31.76 प्रतिशत हैं। स्पष्ट है कि वंचित वर्ग की महिलाओं के लिये कार्य करना अधिक जरूरी है। धर्म के आधार पर सर्वाधिक 73.6 प्रतिशत उद्यमी महिलाएं हिन्दू हैं।

तालिका क्रमांक –5

सामाजिक वर्ग के अनुसार महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम

क	वर्ग	संख्या	प्रतिषत
1	सामान्य वर्ग	24313	31.18
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	23205	29.76
3	अनुसूचित जाति	5689	7.30
4	अनुसूचित जनजाति	24769	31.76
	कुल	**77,976**	**100**

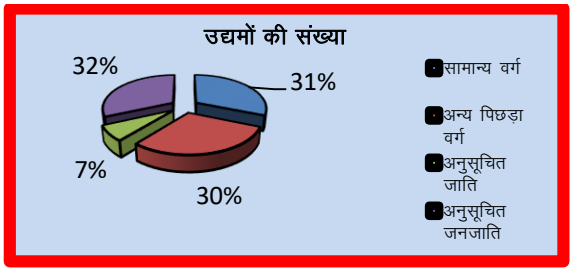

स्त्रोत– छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना रिपोर्ट 2016.

विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई कि छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता की स्थिति काफी निम्न है तथा छत्तीसगढ़ में महिलाओं द्वारा संचालित अधिकांश उद्यम छोटे पैमाने के एवं स्ववित्तीय हैं□

महिला उद्यमिता के विकास हेतु सुझाव–

महिलाएं आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकती हैं तथा गरीबी उन्मूलन एवं सतत विकास के लक्ष्य को हासिल करने में अपना योगदान दे सकती हैं इसलिये आज पूरे विश्व में महिला उद्यमिता के विकास हेतु सरकार व अन्य संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जा रहे है। छत्तीसगढ़ में भी लैंगिक समानता के प्रयास, शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सोच में परिवर्तन, उचित मार्गदर्शन एवं पर्याप्त वित्तीय उपलब्धता के द्वारा महिला उद्यमिता की स्थिति में सकारात्मक सुधार किया जा सकता है।

संदर्भ सूची–

1. छत्तीसगढ़ की औद्योगिक नीति 2014–19.
2. छठीं अखिल भारतीय आर्थिक गणना रिपोर्ट 2016.
3. योजना अक्टूबर 2018.